①

~~Ist Paper~~

B.A.I (Subsidiary)
History

(Q) Religious life of Indus people.

Ans → सिन्धु घाटी की सभ्यता ने विभिन्न रूपों में भारतीय सामाजिक और धार्मिक जीवन को प्रभावित किया। मातृदेवी, नदी, शक्तिपूजा, शिव की पूजा, जिसका शुरुआत सिन्धु सभ्यता से हुई है आज भी भारतीयों के बीच महत्व रखती है। इसने भारतीय संस्कृति को भी प्रभावित किया है। सिन्धु सभ्यता का स्वरूप देशी था जिसे भारतीयों ने अपनाया।

सिन्धु घाटी के निवासियों के धार्मिक विश्वास का पूरा स्वरूप हमारे समक्ष नहीं है, क्योंकि इस सम्बन्ध में किसी प्रकार का लिखित साहित्य अथवा स्मारक हमें उपलब्ध नहीं है। वहाँ प्राप्त अवशेषों के आधार पर ही हम तत्कालीन धार्मिक विश्वासों पर कुछ कह सकते है। यह कल्पना सत्य के कहाँ तक निकट है नहीं कहा जा सकता। वास्तव में यह प्राचीन सभ्य देशों में अवलम्बन से नहीं ज्ञात हो पाता कि वे समस्त प्राचीन निवासी प्रारंभ में बहुदेववादी, प्रकृति पूजक एवं शक्ति के उपासक थे। सिन्धु घाटी के निवासियों की धार्मिक अवस्था भी कुछ इसी प्रकार की थी। इनके धर्म के विषय में ज्ञान प्राप्त करने के प्रमुख साधन मुहरें, तावीजों, मूर्तियाँ आदि है।

① मातृदेवी की उपासना → मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा में असंख्य देवियों की मूर्तियाँ प्राप्त हुई है। जैसा कि बलूचिस्तान में मिली है। इसी प्रकार की मूर्तियाँ पश्चिमी एशिया, इजियन सागर के आस पास, एलम, ~~पश्चिमी~~ एशिया माइनर, मेसोपोटामिया, सीरिया, फैलस्तीन, साइप्रस, बालकन आदि से प्राप्त हुई है। अधिकतर विद्वानों का मत है कि मूर्तियाँ माता प्रकृति की है। मोहनजोदड़ो में मातृदेवी की ऐसी मूर्तियाँ मिली है कि जिसके पेट पर एक पौधा फैलाये बैठी है। प्रकृति ही मनुष्यों का लालन पालन करती है इसलिए स्वाभाविक है कि वे लोग धरती को मातृदेवी मान कर निःसंदेह पूजते रहे होंगे।

शिवपूजा → शिव की पूजा भी सिन्धु घाटी में होती थी और इसका प्रमाण है वहाँ से प्राप्त शिव की त्रिमुखी कृति मूर्तियाँ। सर जॉन मार्शल इसे हिन्दू कालीन शिव का ही प्राचीन रूप मानते है। मैके तो इसे स्पष्ट रूप से शिव ही

मानते हैं। कुछ लोग इसे शिव को पशुपति रूप की आकृति समझते हैं। वहाँ से प्राप्त अन्य मूर्तियों से शिव के नर्तक रूप की कल्पना का आभास भी मिलता है। शिव एवं शक्ति की उपासना के साथ-साथ लिंग पूजा या योनी पूजा भी प्रचलित थी। पत्थरों की बनी हुई लिंग तथा योनी की आकृतियाँ सिन्धु तथा बलूचिस्तान दोनों स्थानों में पाई गई हैं। लिंग पूजा आदि से पशुपति की पूजा निश्चित ही प्रमाणित हो जाती है।

वृक्ष पूजा या प्रकृति पूजा→: वृक्ष पूजा या प्रकृति पूजा के प्रमाण स्पष्ट रूप से मिलते हैं। वृक्ष पूजा दो रूपों में होती थी।

1. वृक्ष का उसके प्राकृतिक रूप में पूजना तथा
2. प्रतीकात्मक रूप में अर्थात उस वृक्ष में किसी देवता का निवास मानकर

सिन्धु निवासियों की वृक्ष पूजा को जानकर हिन्दु धर्म में प्रचलित में वृक्ष पूजा की स्मृति आ जाती है। तुलसी के वृक्ष की पूजा आज भी वास्तविक रूप में होती है। और पीपल में वासुदेव भगवान का वास मान कर उसकी पूजा करते हैं। अर्थात वृक्ष को उसके वास्तविक रूप में पूजने की प्रथा का उदाहरण हड़प्पा की कुछ मोहरों से प्राप्त होता है।

पशु पूजा→: सिन्धु घाटि के निवासी प्रातः पशु पूजा भी किया करते थे। उनकी पशु पूजा का सबसे बड़ा प्रमाण तो यह है कि वे पशुओं की आकृति को विशेष आकार प्रकार की बनाते थे। वे पशुओं में भी देवी का अंश मानते थे। तथा उनकी आराधना करते थे। कुछ किसी देवता विशेष के वाहन के रूप में भी उसकी पूजा करते थे। सिन्धु निवासियों में पशु के प्रति विशेष प्यार था। कुछ पशु जैसे- बैल, साढ़, भैंस, भेड़, शेर आदि पशुओं से प्यार होने का कोई अन्य कारण नहीं हो सकता सिर्फ इनके धार्मिक पक्ष होंगे। आज भी वाहन रूप में हिन्दू शंकर के नन्दी बैल, दुर्गा के सिंह, इन्द्र की गज को सत्ता स्वीकार करते हैं। इससे प्रतीत होता है कि सिन्धु घाटि के निवासी पशु पूजा

भी करते थे।

धार्मिक प्रथायें → इनकी धार्मिकता के विषय में हमारा ज्ञान अत्यन्त स्वल्प है। ये संभवतः स्नान से शरीर पवित्र में विश्वास रखते थे। इन्होंने संभवतः मंदिरों का निर्माण नहीं किया था। पूजा प्रायः खुले स्थानों में या घरों में किया करते थे।

उपर्युक्त विवरण के आधार पर हम कह सकते हैं कि सिन्धु घाटि के निवासियों के धर्म तथा हिन्दु धर्म में प्रचारक साम्य है। और साम्य से प्रभावित होकर मार्शल महोदय ने लिखा है— सिन्धु घाटी के लोगों के धर्म में बहुत सी ऐसी बातें मिलती हैं जो हमें अन्य देशों के धर्म में मिल सकती हैं। और तत्पश्चात उनकी प्रागैतिहासिक और ऐतिहासिक धर्मों के विषय में ठीक सिद्ध होगी। लेकिन सब कुछ होते हुए भी इनका इतनी विशेषता के साथ आयतन है कि आधुनिक युग में प्रचलित हिन्दु धर्म से कठिनता से उसका भेदभाव किया जा सकता है। स्वर्ग नरक के सम्बन्ध में इनकी कोई कल्पना थी या नहीं, यदि थी भी तो क्या थी इसकी कोई हमें जानकारी नहीं है।

हट्स और पिगट महोदय ने भी हिन्दू धर्म का स्रोत सिन्धु घाटी ही माना है।

Scanned with CamScanner